# पंचम अध्याय

## हिन्दी उपन्यास साहित्य में शेवडे जी के योगदान का अनुशीलन —

## पंचम अध्याय

### हिन्दी उपन्यास साहित्य में शेवडे जी के योगदान का अनुशीलन --

हिन्दी उपन्यास साहित्य की सरिता अनेक उपन्यासकारों के निरंतर प्रयास से विकसित होती दृष्टिगोचर होती है। इस विकास में उत्तर प्रान्तीय उपन्यासकारों के साथ श्री अनन्त गोपाल शेवडे जी जैसे हिन्दीतर भाषिक उपन्यासकारों का भी योगदान रहा है। शेवडे जी ने सन १९३२ से १९७७ तक निरंतर लिखकर कुल ११ उपन्यासों की रचना की। उनका समस्त उपन्यास साहित्य त्याग, संयम, समर्पण, सेवा, स्वत्व, समानता, मानवता, राष्ट्रप्रेम तथा सभ्यता के आदर्शों से प्रभावित है। जीवन के इन आदर्शों से शेवडे जी की प्रतिमा एक निष्ठावान साहित्यिक एवं चिन्तक की बनी रही। आदर्शों के प्रति अटल निष्ठा का भाव, उनके जीवन का प्रकाशमान पक्ष है। उनकी राष्ट्रनिष्ठा, देशप्रेम आगामी पीढ़ी के लिए दीपशिखा का कार्य करेगी इसमें संदेह नहीं है। सत्यं, शिवं, सुंदरम् के भव्य प्रकाश से जगमगाती हुई इन कृतियों में मानव जीवन के कलुष को काट फेंकने की क्षमता है और साथ ही साथ मनुष्य के सद्गुणों में चार चाँद लगा देने का जादू भी है।

विषय, शिल्प और शैली की विविधता शेवडे जी की उपन्यास कला के विकास का स्थूल प्रमाण है। शेवडेजी ने सन १९३२ में 'ईसाईबाला' जैसा साधारण उपन्यास लिखा। हर उपन्यासकार अपनी युवा अवस्था में प्रेम के त्रिकोणात्मक संबंधों की चर्चा ही अपने साहित्य का लक्ष्य मानता है। शेवडे जी इस के लिए कैसे अपवाद हो सकते हैं? परंतु जैसे-जैसे समय गुजरता गया, उम्र और अनुभव की प्रौढ़ता आती गयी, उनके उपन्यासों के विषय,